ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)64-66
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. प्रीति कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा

Corresponding Author :
डॉ. प्रीति कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा

उपन्यास 'खुदा गवाह है' में नारी का शोषण एवं संघर्ष

नारी विमर्श के प्रमुख चिंत क उपन्यासकार राजेन्द्र मोहन भटनागर का खुदा गवाह है उपन्यास रेगिस्तानी जिन्दगी में स्त्री शोषण उत्पीड़न और संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज है। इस उपन्यास में मुस्लिम समाज की पृष्टभूमि को आधार बनाकर चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया है।

शबनम के अम्मी, अब्बा और भाईजान हिन्दुस्तान की सरहद पार करते हुए मारे गये। उनके दोस्त ने ही उन तीनों को गोली मारकर अपने रास्ते से हटा दिया और कमसिन शबनम की और बढ़ा। शबनम रेगिस्तान में आँधी सी दौड़ पड़ी थी बहुत दूर निकल गई। रास्ते में उसे इमरान मिलता है। शबनम ने अपनी सारी कहानी बता दी। "घबराओ मत, शबनम वह यहाँ आ गया तो खुदा कसम उसे हम जिन्दा नहीं लौट जाने देंगे।"[1] इमरान ने जोश से कहा। जब इमरान को मालूम चलता है कि उसका निकाह नहीं हुआ है तो वह शबनम से निकाह की बात करता है। "शबनम वक्त की नजाकत पहचानों। खूब जानता-समझता हूँ कि इस वक्त तुम पर क्या गुजर रही है ? मुझे तुम्हारे सामने बेहूदा प्रस्ताव नहीं रखना चाहिए था।..कुत्ते.. भेड़िए सब जगह हैं।... उनकी निगाहें तुम्हें खा जायेगी। तब तुम..। ऐ मेरे मौला यह क्या इन्तहान ले रहा है हम गरीबों का ?"[2]

दरअसल यह गाँव इमरान का नहीं था। यह गाँव उसके चाचाजान के दोस्त का है जो यहाँ पर पशु मेले में होनेवाले मुशायरा में बुलाया है। भागते भागते शबनम का पाँव जख्मी हो गया था। अचानक वह बेहोश होकर गिर गई। इमरान उसे चाचाजान के दोस्त के घर ले आता है। वह मौलाना के पास जाना चाहता है, लेकिन उसके चाचाजान मना कर देते है कि जुबान बंद रखे।

शबनम की आँख खुलती है, तो उसे पता चलता है कि वह सज्जाद अली की हरम में है। सलमा, चम्पा से मालूम चलता है, कि सज्जाद अली दरिन्दा अब तक न जाने कितनी मासूमों को अपना हवस का शिकार बनाया है।

सज्जाद अली पहले बुरा इंसान नहीं था। खुदा से खौफ खाता था। जब से मौलवी आया है, तभी से उसने सज्जाद को धर्म के नाम पर इंसान से शैतान बना डाला। चम्पा तेरह वर्ष की थी, उसको मौलवी ने राजस्थान के एक मंदिर से उठवा लिया और सज्जाद के सामने पेश कर दिया। रोते-रोते उसकी आँखें सूज गई। गला बैठ गया। खालाओं ने उसे समझाया "बेटी अब तेरा कोई घर नहीं ...। अब तेरे कोई माँ बाप नहीं ...। ... अब तेरा कोई गाँव नहीं। ... तू यदि अर्ज विनती करके सज्जाद मियाँ की दया भी पा जाए तो तेरे माता-पिता अब तुझे स्वीकार नहीं करेंगे। .. कोई नामुराद तुझसे चकला चलवाएगा या कोई छूछूँदर की औलाद तुझे कोठे पर बिठा आयेगा।.. फिर तेरी जवानी गन्दी नाली बनके गुजरेगी और बुढ़ापा भीख माँगकर।"[3]

अचानक इमराम की तबीयत खराब हो गई उसके मन में सज्जाद का डर बैठ गया था। अब वह वहाँ से शबनम को निकालने की सोच रहा था, लेकिन मौत के भय से वह कांप उठता था। वह शबनम से नहीं मिल सका केवल खबर सुनी थी कि वह सख्त बीमार है। सज्जाद अली चार वर्ष का था तभी किसी ने उसे रेगिस्तान में फेंक दिया था। रामदास बाबा उसे उठाकर ले आये। उन्होंने उसके माता-पिता की बहुत तलाश की लेकिन वह नहीं मिले। गले में धर्म की तावीज देख उसका नाम सज्जाद रख दिया। कोई भी उस मासूम को अपनाने के लिए तैयार नहीं हुआ। बाबा ने खुद उसकी परवरिश की और तालीम दी। कुरान का सार समझाया। एक नेक इंसान बनाया। बाबा हिमालय पर चले गये। बीस वर्ष बाद लौटे तो सज्जाद अली की ख्याति दूर से ही सुन लिया कि वह एक खूँखार जालिम और खौफनाक दरिन्दा है शैतान है। बाबा के वापस आने पर वह बाबा से बार-बार आग्रह करता है लेकिन बाबा उसके पास चलने से साफ इंकार कर देते हैं। उसे अब अपने आपसे नफरत होने लगी।

रमजान सज्जाद अली का भरोसेमंद आदमी है। कारे पहलवान को सज्जाद ने धोखे से मरवा दिया था लेकिन नसीब से बच गया। सज्जाद को मौलवी भड़काता है, कि रमजान गद्दारी कर रहा है। सज्जाद उसका पीछा करता पुष्पा के घर जाता है। पुष्पा को नंगा कर बलात्कार करता है और भाग जाता है। पुष्पा हाँसिये से अपना पेट चीर लेती है, उसकी अँतड़िया बाहर निकल आती है। रमजान उसे बहन मानता थ। वह पुष्पा के झोपड़ी में आता है उसके नंगी देह पर कपड़ा डालता है उसीका रूह विद्रोह कर देता है रमजान तूने यह क्या किया ? उस कल्लाँच को बचाया ....वह कसाई क्या बचाने लायक था। अब न जाने वह कितनों के घर और उजाड़ेगा। कितनों की माँग का सिन्दूर पोछेगा ....यह उसने क्या क्या "[4] कहते-कहते उसने हँसिये पुष्पा के पेट से निकालकर अपने पेट में दे मारा।

शबनम और इमरान को भागने में खाला मदद करती है, क्योंकि शमरेश खाँ शबनम को अपने हरम में ले जाना चाहता है। उन दोनों को बचाओ-बचाओ की आवाज सुनाई देती, उधर जाते है तो देख अवाक् रह जाते हैं कि ऊँट पागल हो गया था। आदमखोर ऊँट अपने पीठ पर सज्जाद अली को लेकर बदहवास दौड़ रहा था। शबनम इमरान से उसकी मदद करने कहती है पर वह मना करता है लेकिन शबनम के जोर देने पर वह मान जाता है। एक बूढ़े इंसान की मदद से वह रेगिस्तान से बाहर आता है।

सज्जाद के नहीं लौटने पर शमशेर बहादूर खां ने मौलवी के कहने पर अफवाह फैला दी कि सज्जाद अली को मरवाने में बाबा का हाथ है, वह लोग हिन्दू मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहते थे। बाबा बार-बार मिन्नते कर रहे थे "नहीं मेरे प्यारे बच्चों यह सब गलत है। आपस में प्रेम से रहते आये हो, वैसे ही बने रहो।... भाई-भाई लड़ेंगे तो जीना हराम हो जायेगा, और बाहरी ताकतें हमें खतम कर देंगी"5 बाबा रामसिंह प्रार्थना कर रहे थे। "हिन्दूओं को गीता की सौगंध और मुसलमानों को कुरान शरीफ की कसम जो आपस में नहीं लड़े-भिड़ें।"6 शमशेर बहादुर खाँ खुश होते हैं, कि इस बार हिन्दू मुसलमान आपस में टकरा गए तो मजा आ जायेगा। अहमद बाबा रामसिह के हाथ पैर बाँध देता है, बाबा उफ् तक नहीं करते। चारों तरफ खून खराबा चालू हो जाता है तभी कारे पहलवान हाथ में बंदूक थामे वहाँ पहुँचता है। शमशेर बहादुर खाँ चुपचाप खिड़की से यह नजारा देख रहा था और सोचता है कि अब उसके रास्ते का काँटा पलभर में साफ हो जायेगा। तभी कारे पहलवान बाबा के चरणों में अपना सिर रख दिया और बाबा ने आशिर्वाद दिया। कारे पहलवान बाबा रामसिंह से कहता है सज्जाद चाहिए। "मेरे लिए तू भी सज्जाद है, बेटे और सज्जाद कारे पहलवान।... नफरत हम सबकी दुश्मन है। ..मैं

नहीं चाहता कि नफरत की चिनगारी हम सबके वजूद को मिटाकर राख कर दें।"[7] कारे पहलवान बाबा का शुक्रिया अदा कर साथ में चेतावनी भी दिया कि अब यहाँ कोई खुन खराबा नहीं होनी चाहिए। बाबा रामसिंह जो कहें वह इस इलाके के प्रत्येक इंसान के लिए खुदा का कानून है गीता है कुरान है। उनकी बात सबको माननी है। फिर बाबा रामसिंह का पाँव छू कर और शमशेर बहादुर खाँ के पाँव में गोली मारकर ऊँट पर सवार होकर चल दिया।

सज्जाद की हालत में काफी सुधार हो चुका था। बैद्य की दवा और शबनम व इमरान की रात दिन की सेवा से वह चंगा हो रहा था। इमरान एक दोपहर शबनम से कहता है, "यह कैसी मुसीबत मोल ले ली। जानती हो कि हम घायल शेर को दूध पिला रहे है।... सज्जाद आहत शेर है, ठीक होने पर वह सबसे पहले... आगे वह नहीं कह सका। शबनम इशारा समझ गई। हालाँकि अंदर ही अंदर कई बार वह भी डर गई थी। कई दिनों पश्चात सज्जाद को होश आता है। वह शबनम से बहुत कुछ कहना चाहता है, लेकिन कह नहीं पाता। वह बात दिमाग से निकाल दो। ... वह मेरा फर्ज था सज्जाद"[8] शबनम ने गंभीर होकर कहा। जग्गा सज्जाद को ढूढते वहाँ आ जाता है। जग्गा के कंधे पर झुलती बंदूक को देख शबनम का मन शंका में डूब गया। इमरान को अच्छा अवसर हाथ लगा। वह सोच रहा था कि रास्ते का काँटा ही हट जाये। दूर से बोल पड़ा ''शबनम सज्जाद बुला रहा है।''[9] जग्गा बिना रूके अंदर चला गया। सज्जाद शबनम के बारे में बताता है कि किस तरह उसने उसकी जान बचाई। सज्जाद खुदापरस्त हो चला था। उसका मन इबादत में लगने लगा था। बाबा के पास रहकर वह अपनी बाकी जिन्दगी बिता देना चाहता है। इमरान जाने की तैयारी करने लगा उधर जग्गा भी अपने वफादार साथियों के साथ सज्जाद अली को लेने आ पहुँचता है। ऊँट को देख उसे पुष्पा के ऊँट की याद आती है। जानवर को अच्छे बुरे की पहचान होती है, लेकिन आदमी को क्यों नहीं। पुष्पा की याद उसे तन्हा दलदल में ले जाता है, जितना जोर लगाता उतना ही धँसता जाता था। ... ''यह पापात्मा उसमें कहाँ से आ जमी। कहाँ गया था, तब उसका जमीन ?.. ''ऊँट ने अपनी मालकिन का बदला लेने के लिए क्या कुछ नहीं किया। जबकि वह एक ही नस्ल का है।.. या खुदा ..।''[10] सज्जाद के हाथ दया के लिए उठ गए।.. वह परवरदिगार से अपना गुनाह कबूल करता है और सजा के पाने के लिए तैयार था। शबनम चाहती है कि यदि सज्जाद प्यार का इजहार करेगा तो वह इनकार नहीं करेगी। लेकिन सज्जाद अली उसे पहले एयाशी का एक हसीन साधन मानता था और आज जब उसे उसका खोया हुआ होश लौट आया है। तब वह शबनम को खुदा मानता है, उसकी पूजा करता है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ.राजेन्द्रमोहन भटनागर - खुदा गवाह है - पृ. सं.-14
2. तथैव - पृ. सं.-16
3. तथैव - पृ. सं.-45
4. तथैव - पृ. सं.-143
5. तथैव - पृ. सं.-206
6. तथैव - पृ. सं.-216
7. तथैव - पृ. सं.-217
8. तथैव - पृ. सं.-230
9. तथैव - पृ. सं.-225
10. तथैव - पृ. सं.-230

• • •